MEANING, NATURE, AIM AND OBJECTIVES OF SOCIAL SCIENCE TEACHING

2ND SEMESTER

PAPER-VII PEDAGOGY (S.SCIENCE)

BY:-

MRS.RINKI KUMARI

DEPTT.OF EDUCATION

MMHA&PU, PATNA

DATE:-3rd MAY, 2020

Scanned with CamScanner

इकाई प्रथम – उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषायें

1.4.1 सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य

1.4.2 उद्देश्य की आवश्यकता एवं महत्व

1.4.3 सामाजिक अध्ययन के शैक्षिक उद्देश्य

1.5 शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य

1.5.1 प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य एवं लक्ष्य

1.5.2 माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य एवं लक्ष्य

1.6 भारत में सामाजिक अध्ययन – शिक्षण के उद्देश्य

1.7 लक्ष्य एवं उद्देश्य में अंतर

1.8 सारांश

1.9 अभ्यास कार्य

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.11 संदर्भ ग्रंथ सूची एवं उपयोगी पुस्तकें

Scanned with CamScanner

1.1 प्रस्तावना:-

मनुष्य का जन्म समाज में हुआ है तथा मनुष्य के विकास में समाज का बहुत ही महत्वपूर्ण योगादान होता है। मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी कहा जाता है। यह एक तर्क का विषय है कि मनुष्य बड़ा है या समाज, परन्तु सभी इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि दोनों एक दूसरे के लिए अनिवार्य है। मनुष्य और समाज की यह परस्पर निर्भरता आदिकाल से चली आ रही है। समाज विद्यालय के माध्यम से समाज के रीति–रिवाज, परम्पराओं, संरचना, मूल्यों तथा भविष्य की चुनौतियों आदि का ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार से मनुष्य एवं समाज की इन आवश्यकताओं की पूर्वि हेतु विद्यालय स्तर पर एक ऐसे विषय की आवश्यकता महसूस की गयी जिसमें मानवीय विषयों का संश्लेषण संभव हो और यह विषय सामाजिम अध्ययन के नाम से विकसित किया गया है।

मानव एक क्रियाशील प्राणी है। चेतन तथा अवचेतन रूप से उसकी क्रिया के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य निश्चित रहता है। इन उद्देश्यों के निर्देशित, प्रेरित और संचालित होकर ही वह विभिन्न प्रकार से व्यवहार करता है। सफलता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि मानव का व्यवहार, विचार अथवा कार्य बौद्धिक दिशा की ओर ही अग्रसरित है। विकास की दृष्टि से व्यक्ति के लिए कुछ भी आवश्यक है वही शिक्षा के उद्देश्य है। वर्तमान समय में शिक्षा एक वृहद् व्यवसाय की ओर उन्मुख हो रही है। आज शिक्षा के क्षेत्र में समाज का बड़ा श्रेष्ठतम अंश प्राचार्य, शिक्षक, निरीक्षक, सहकर्मियों तथा अन्य अधिकारी वर्ग के रूप में कार्यरत् है, जिनके कार्यों (Tasks) के दायित्व के द्वारा समाज को सम्पन्नता तथा वैभवता के नवीन संदर्भों की ओर उन्मुख किया जा रहा है। अतः समाज के उपयुक्त एवं उपयोगी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर सामाजिक विज्ञान की शिक्षा के उद्देश्यों की रचना की गयी है क्योंकि किसी विषय का अध्ययन करने से पूर्व उसके उद्देश्यों तथा लाभों के विषय में जान लेना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि उद्देश एक चेतनशील अभिप्राय होता है जिसको प्राप्त करना हमारे विषय के अध्ययन एवं शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य होता है। उद्देश्य के अभाव में शिक्षा की सफलता अनिश्चित एवं असंभव है। इस संबध में शिक्षाशास्त्री बी. डी. भाटिया ने लिखा है, "लक्ष्य एवं उद्देश्य के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है, जो अपने साध्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पनवार हीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी।

Scanned with CamScanner

"Without the knowledge of aims, the education in like a sailor who does not know his goal or his destination, and the child is like a rudderless vessel which will be drifted along some where ashore" – B.D. Bhatia

इन शब्दों से स्पष्ट है कि उद्देश्य के उचित ज्ञान अथवा वांछित उद्देश्य की दिशा में पर्याप्त प्रयास नहीं किये जायेंगे तो शिक्षक एवं शिक्षार्थी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। किसी विषय के शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों के अनुसार होता है। शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण जीवन के आदर्श तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियों के आधार पर किया जाता है। शिक्षा प्रक्रिया में कई बातें सम्मिलित हैं जैसे – शिक्षा स्तर के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करना, पाठ्यक्रमों का निर्माण करना, विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों का मापन एवं मूल्यांकन करना, विद्यालय में विविध प्रकार की क्रियाओं को उचित रूप से संगठित करना आदि।

1.2 उद्देश्यः–

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आपः–

- समाजिक अध्ययन शब्द का अर्थ बता सकेंगें,
- विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन नामक विषय की वर्तमान स्थिति का वर्णन कर सकेंगें।
- सामाजिक अध्ययन के अध्यापन से उच्च प्राइमरी स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को समझ सकेंगें।
- सामाजिक अध्ययन के अध्यापन से माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक अध्ययन के अध्यापन के सामान्य लक्ष्यों को समझा सकेंगें।
- भारत में सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को समझ सकेंगें।

1.3 सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषायेंः–

समाजिक अध्ययन से अभिप्राय समाज के विषय में किये जाने वाले अध्ययन से है। इसके अंतर्गत हम सामाजिक व्यक्तियों की अनेक क्रियाओं का अध्ययन करते हैं। यह व्यक्ति और समाज के संबंधों का अध्ययन है। यह व्यक्ति का संपूर्ण वातावरण प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और नागरिकता के साथ संबंधों का अध्ययन है। यह व्यक्ति तथा समाज के प्रति अनुकूलन के साधनों का

Scanned with CamScanner

अध्ययन है। सामातिक अध्ययन की परिभाषायें विभिन्न विद्वानों एवं शिक्षा शास्त्रीयों ने भिन्न–भिन्न दी हैं, कुछ प्रमुख परिभाषाओं का वर्णन इस प्रकार से है:–

जेम्स हेमिंग के अनुसार– "सामाजिक अध्ययन ऐतिहासिक, भौगोकिल और सामाजिक संबंधों एवं अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन है।"

वेल्से के अनुसार – "सामाजिक अध्ययन उस विषय सामग्री की ओर संकेत करता है जिसके मूल तत्व प्रमुख रूप से सामाजिक होते हैं।"

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद – "सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा सामाजिक एवं भौतिक वातावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है।"

एम.पी. मुफात के अनुसार – "सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञानों और सामाजिक जीवन पर आधारित ज्ञान का वह भंडार है जिससे युवा वर्ग को आधुनिक सभ्यता के विकास को समझने में सहायता प्राप्त होती है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सामाजिक अध्ययन के मूल में मनुष्य है। इसमें मनुष्य ने अपने अस्तित्व के लिए अपने परिवेश से जो संघर्ष किये हैं, इनका अध्ययन किया जाता है।

1. सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा उनके समुदायों का अध्ययन है।

2. यह मानवीय संबंधों पर बल देता है एवं मानव जीवन से जुड़े क्रियाकलापों का अध्ययन किया जाता है।

3. समाजिक अध्ययन एवं व्यापक विषय है जिसकी विषय–वस्तु एवं क्षेत्र बहुत विस्तृत है।

4. सामाजिक अध्ययन के माध्यम से मानव समाज एवं उससे संबंधित समस्त बातों की जानकारी प्राप्त होती है।

5. सामाजिक अध्ययन से लोकतंत्र, विश्व–नागरिकता, विश्व–बंधुत्व, धर्म निरपेक्षता आदि के उद्देश्य की पूर्ति होती है।

क्रियाकलाप–

सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषा बताइयें।

1.4 सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य:–

Scanned with CamScanner

1.4.1 सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यः– विश्व की प्रत्येक वस्तु, विचार तथा कार्य से लाभदायक परिणाम को तभी प्राप्त किया जा सकता है जबकि उनके पूर्व निश्चित उद्देश्य हो। यही सत्य सामाजिक अध्ययन के लिए भी लागू होता है। इसके अतिरिक्त जब व्यक्ति के सामने कोई निश्चित उद्देश्य होता है तो उसमें तत्संबंधी कार्य करने की प्रेरणा उत्पन्न हो जाती है, जिनका बल तथा प्रोत्साहन पाकर वह बाधाओं एवं कठिनाइयों की चट्टान को चूर करता हुआ विश्व के महान से महान कार्य कर डालता है। इस तथ्स के आधार पर यही कहा जा सकता है कि उद्देश्य रहित शिक्षा प्राप्त करने में न मन लगता है और न ही वह शिक्षा फलदायिनी होती है।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि उद्देश्य एक पूर्व दर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है, अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य निश्चित है और स्पष्ट है तो व्यक्ति उस समय एक उत्साहपूर्ण चलता रहता है जब तक कि वह उस लक्ष्य को प्राप्त न कर ले। जैसे–जैसे लक्ष्य निकट आता जाता है वैसे–वैसे उसकी क्रियाओं में भी अन्तर आता जाता है। अन्त में एक समय ऐसा आता है जब मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इस लक्ष को प्राप्त करने को ही उद्देश्य की प्राप्ति कहते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उद्देश्य वह पूर्व दर्शित लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ चिन्तनशील रहते हुए क्रियाशील होता है।

1.4.2 उद्देश्य की आवश्यकता एवं महत्वः–

मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के लिए उद्देश्यों का विशेष महत्व होता है। बिना उद्देश्यों के इस जीवन के किसी भी क्षेत्र में यही बात है। इसका एकमात्र कारण यह है कि प्राकृतिक बालक तथा प्रगतिशील एवं विकसित समाज की आवश्यकताओं तथा आदर्शों के मध्य एक गहरी खाई होती है। इस खाई को पारने के लिए केवल शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो किसी उद्देश्य के अनुसार समाज की परिवर्तित हुई आवश्यकताओं तथा आदर्शों को दृष्टि में रखते हुए बालक की मूल प्रवृत्तियों का विकास इस प्रकार से कर सकती है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों का ही विकास होता रहे। जब व्यक्ति को किसी उद्देश्य का स्पष्ट ज्ञान होता है जो उसके मन में दृढ़ता तथा आत्मबल जाग्रत हो जाता है। उद्देश्य हमें शिक्षण–विधियों के प्रयोग करने साधनों का चयन करने, उचित पाठ्यक्रम की रचना करने तथा परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करने में भी सहायता प्रदान करता है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों विकास की और अग्रसर होते रहते हैं। जिस शिक्षा का कोई उद्देश्य नहीं होता, वह व्यर्थ है। ऐसी उद्देश्य विहीन शिक्षा को प्राप्त करके बालकों में उदासीनता उत्पन्न हो जाती है। जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने किये हुए कार्यों में सफलता नहीं मिल पाती जिससे उनका मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा नैतिक पतल होता रहता है। अतः किसी भी विषय के शिक्षण से पहले उसके उद्देश्य पूर्व

Scanned with CamScanner

निश्चित होने चाहिए, क्योंकि उद्देश्यों के अभाव में वह विषय अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पायेगा। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी कहा है कि, "सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य छात्रों को अपने सामाजिक वातावरण में संबोधित कराना है, जिसमें परिवार, समुदाय राज्य तथा राष्ट्र निहित है।"

1.4.3 सामाजिक अध्ययन के शैक्षिक उद्देश्यः–

प्रत्येक विषय के लक्ष्य सामान्य शिक्षा के लक्ष्यों के आधार पर निर्धारित किये जाते हैं। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नहीं हो सकती है। प्रत्येक विषय किसी न किसी रूप में उनकी प्राप्ति में सहायक होता है। इसी कारण उसको पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाता है। इसके द्वारा शिक्षा के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नागरिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान हो जाती है। इसके उद्देश्यों का विवेचन निम्न प्रकार है–

1. सामाजिक भावना का विकासः– सामाजिक अध्ययन के द्वारा छात्रों में सामाजिकता की भावना का उचित विकास किया जा सकता है। इसकी सहायता से छात्रों में अनेकों सामाजिक गुणों का विकास किया जा सकता है। ब्रिटेन की पाठ्यक्रम सुधान समिति ने अपने प्रतिवेदन में कहा कि "विद्यालयों में सामाजकि अध्ययन के शिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति को, समुदाय में ले जाकर और उसको सामूहिक जीवन प्रक्रिया तथा सामूहिक आदर्शों से परिचित कराकर सामाजिकता की ओर अग्रसर करना अथवा सामाजिक चरित्र का विकास करना है।" इसके माध्यम से विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग एवं सहकारिता आदि गुणों का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थी को सामाजिक नागरिक बनाना है।

2. प्रजातंत्र की शिक्षा प्रदान करना (To impart education of republic) :– आज पूरे विश्व में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को स्वीकार कर लिया गया है। यह जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा संचालित शासन व्यवस्था है। इस शासन व्यवस्था में जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनना, सरकार बनाना तथा संतोषजनक कार्य न करने पर सरकार को हटाना, जनता के लिए कानून बनाना तथा उसमें आवश्यक संशोधन करना आदि, सभी कार्य प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नागरिकों के द्वारा ही किये जाते हैं। दूसरे शब्दों में, लोकतंत्र की व्यवस्था की सफलता पूर्णतः नागरिकों पर ही निर्भर है। सामाजिक अध्ययन शिक्षण उद्देश्य बालकों को प्रजातंत्र के लिए तैयार करना तथा उनमें इसके लिए आवश्यक गुणों का विकास करना है। आज के विद्यार्थी कल के भावी नागरिक बनकर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा सकते हैं। अतः प्रारंभ से ही लोकतांत्रिक भावना का विकास अति आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

3. अपनत्व की भावना का विकास (Development of sense of belongingness) :– सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों में से एक उद्देश्य छात्रों में अपनत्व की भावना का विकास करना है। यह केवल इन संबंधों का तथ्यात्मक ज्ञान ही नहीं प्रदान करता है, वरन् उसकी अन्य परिस्थितियों में व्याख्या भी करता है। विद्यार्थियों में अपनत्व की भावना का विकास करके ही सामाजिकता का विकास किया जा सकता है। तथा आपसी सहयोग एवं बंधुत्व की भावना का विकास भी किया जा सकता है क्योंकि जब तक छात्रों के मन में किसी स्थान, समुदाय, देश या विश्व के प्रति, अपनेपन की भावना नहीं होगी तब तक उसके विकास में सहयोग नहीं दिया जा सकता है। अतः छात्रों के मन में अपनेपन की भावना का विकास होना अत्यंत आवश्यक है और इस कार्य में हमारी सहायता सामाजिक अध्ययन करता है।

4. उत्तम नागरिकता का विकास (The aim of good citizenship) :– सामाजिक अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक नागरिकता के गुणों का विकास किया जाता है। किसी भी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए एक आवश्यक गुण उत्तम नागरिकता है, क्योंकि एक उत्तम नागरिक होने के नाते उनके क्या–क्या कर्तव्य एवं अधिकार हैं, इन सभी बातों की जानकारी होनी चाहिए। देश की समस्याओं के प्रति जागरूकता तथा राष्ट्रीय विकास के कार्यों में अपनी सहायता देने के संबंध में भी उन्हें जानकारी होनी चाहिए। उत्तम नागरिकता का विकास सामाजिक अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य माना गया हे। उत्तम नागरिकता क्या है या उत्तम नागरिक कौन है? इस संबंध में विचारकों में मतभेद पाया जाता है, परन्तु सभी विचारक इस बात पर सहमत हे कि उत्तम नागरिक सदैव एक आदर्श प्रस्तुत करेगा। उत्तम नागरिकता की प्राप्ति के लिए निम्न लिखित गुणों की प्राप्ति आवश्यक है:–

i. वह व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सबके लिए समान अधिकारों में आस्था रखता है।
ii. लोकतांत्रिक सिद्धान्तों का विकास तथा दैनिक जीवन में उनका प्रयोग।
iii. समस्याओं के समाधान के लिए ज्ञान एवं कौशलों की प्राप्ति।
iv. व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा समस्त व्यक्तियों के लिए समानता के सिद्धान्तों में निष्ठा।
v. दूसरों कि लिए सद्भावना एवं अपने देश पर गर्व की भावना रखना।
vi. निर्णय लेने में सामूहिक या सम्मिलित उत्तरदायित्व को स्वीकार करना।
vii. परिवर्तित विश्व में प्रभावकारी जीवन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय करने की योग्यता।

5. सामाजिक विरासत तथा समस्याओं का ज्ञान (Knowledge of Social Heritage & Problems) :– सामाजिक अध्ययन का शिक्षण बालकों को केवल सामाजिक समस्याओं से ही अवगत नहीं कराता है, वरन् उनके समाधान के लिए तत्परता एवं विभिन्न कौशलों का विकास भी करता है। सामाजिक

Scanned with CamScanner

विरासत का ज्ञान भी सामाजिक अध्ययन के माध्यम से कराया जाता है क्योंकि जब व्यक्ति समाज की चेतना में भाग लेता है तभी शिक्षा प्रारंभ होती है। अतः सामाजिक अध्ययन सामाजिक विरासत का ज्ञान प्रदान करके शिक्षा की प्रक्रिया को अग्रसर करता है।

6. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय की भावना का विकास (Development of National & International understanding) :– कोठारी आयोग ने राष्ट्रीय एकता को परिभाषित करते हुए कहा था कि "राष्ट्रीय एकता में राष्ट्र के भविष्य के प्रति विश्वास, जीवन–स्तर में सतत् उन्नति, मूल्यों, कर्तव्यों स्वच्छ एवं भेदभाव रहित प्रशासन पद्धति तथा पारस्परिक सद्भावना आदि बातें सम्मिलित हैं।"

डॉ. एस. राधाकृष्णन ने कहा था कि, "राष्ट्रीय एकता ईंट और गारे से नहीं बनायी जा सकती। न ही छैनी और हथौड़े से इसका निर्माण किया जा सकता है। इसे चुपचाप व्यक्तियों के दिलो–दिमाग में उत्पन्न होना होगा और इसकी एममात्र प्रक्रिया है – 'शिक्षा प्रक्रिया'

इस प्रकार से स्पष्ट है कि बालकों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास शिक्षा के द्वारा ही किया जा सकता है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय की भावना के लिए यह आवश्यक है कि उनमें परस्पर प्रेम, भाईचारे, विश्वास और सहयोग की वैसी ही भावना होनी चाहिए जैसी कि एक परिवार के सदस्यों के मध्य होती है। विद्यार्थियों में इस प्रकार की भावनाओं का विकास सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के द्वारा किया जा सकता है। यह एक ऐसा विषय है जो बालकों को संकुचित विचारों से ऊपर उठाकर मानवीय एकता के बुनियादी तत्व को आत्मसात् करने में सहायता देता है और इस कार्य में हमारी सहायता सामाजिक अध्ययन करता है। इस विषय के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की शिक्षा सामग्री और अनुभवों के द्वारा यह कार्य अच्छी तरह पूर्ण किया जा सकता है।

7. समस्या समाधान की योग्यता का विकास (Development of Problem Solving Ability) :– मनुष्य को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए उनमें विशेष प्रकार की योग्यता का विकास करना होता है। छात्रों में इस प्रकार की योग्यता का विकास करने में सामाजिक अध्ययन महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। इसके द्वारा छात्रों में विभिन्न समस्याओं को उचित परिप्रेक्ष्य में समझने की योग्यता का विकास होता है और यही योग्यता उनकी समस्याओं को उचित परिप्रेक्ष्य में समझने की योग्यता का विकास होता है और यही योग्यता उनकी समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध होती है।

Scanned with CamScanner

8. परस्पर निर्भरता की भावना का विकास (Development of the feeling of Interdependence) :– आज समाज की संरचना बड़ी जटिल हो गयी है। मनुष्य एक–दूसरे के सहयोग के बिना कोई कार्य नहीं कर सकता है। समाज के बिना मनुष्य को कोई अस्तित्व ही नहीं है। ऐसे में मनुष्य एक–दूसरे को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करना रहता है, अर्थात् समाज का प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक–दूसरे पर किसी न किसी रूप में निर्भर है। इस तथ्य को व्यापक दृष्टिकोण में देखने पर हम पाते हैं कि आज मनुष्य ही नहीं विश्व के सभी राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक–दूसरे पर निर्भर है। इस सहयोग एवं परस्पर आत्म–निर्भरता के विकास में सामाजिक अध्ययन हमारी सहायता करता है। इसका उद्देश्य छात्रों में परस्पर निर्भरता एवं सहयोग की भावना का विकास करता है। इसके द्वारा छात्रों को समझाया जा सकता है कि मनुष्य ने किस प्रकार से सहयोग एवं परस्पर निर्भरता के द्वारा अपनी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए स्वयं अपना और समाज का विकास किया है।

9. समायोजन की योग्यता का विकास (Development of ability of co-ordination) :– सामाजिक अध्ययन के द्वारा छात्रों को न केवल अपने सामाजिक एवं भौतिक वातावरण की जानकारी मिलती है अपितु वे किस प्रकार से इस वातावरण में स्वयं को समायोजित कर सकें, इसकी भी जानकारी प्राप्त होती है। यह विषय छात्रों में ऐसी योग्यता का विकास करता है कि वे अपने को वातावरण से साथ समायोजित कर सकें।

10. व्यक्तित्व का संर्वागीण विकास (Development of Personality) :– शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा के इस उद्देश्य की पूर्ति सामाजिक अध्ययन के द्वारा पूरी की जा सकती है। इस विषय के माध्यम से बालक में उन सभी गुणों का विकास करता है जो उसके सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकें। यह विषय विद्यार्थी में सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक, चारित्रिक तथा सौन्दर्यात्मक से संबंधित सभी प्रकार के विकास को सही एवं स्वस्थ रूप देता है। यह विषय ही विद्यार्थी को समाज का अंग बनाकर संपूर्ण रूप से मानव की तरह जीना सिखाता है।

समाजिक अध्ययन के इन उद्देश्यों के संबंध में यह कहा जा सकता है कि ये उद्देश्य अपने आप में अंतिम नहीं है। ये उद्देश्य समय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं, क्योंकि सामाजिक अध्ययन एक गतिशील विषय है और समाज में परिवर्तन के कारण इस विषय में भी परिवर्तन होता रहता है। उनके विद्वानों ने इस विषय के अनेकों उद्देश्यों का वर्णन किया है। प्रमुख विद्वानों के अनुसार सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार से है–

आर.सी. एडविन ने सामाजिक अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्यों का वर्णन किया है–

Scanned with CamScanner

i. विद्यार्थी के द्वारा लोकतांत्रिक सिद्धान्तों के अपनाना।

ii. विद्यार्थी को परिवार, समुदाय, राज्य एवं राष्ट्र के विषय में सामाजिक विचार प्रदान करना।

iii. विद्यार्थी को उनके सामाजिक एवं राजनीतिक उत्तरदायित्व के विषय में जागरूक करना।

iv. विश्व के विषय में समस्त जानकारी प्रदान करना।

v. विद्यार्थी में तर्कशक्ति, चिन्तन–शक्ति, कल्पना–शक्ति तथा निर्णय–शक्ति आदि गुणों को विकास करना।

vi. विद्यार्थी में देश प्रेम, साहस, सहयोग तथा सहिष्णुता जैसे गुणों का विकास करना।

vii. विद्यार्थी को प्राकुतिक वातावरण को समझने में सहायता देना जिससे वे स्वयं को भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अनुकूल समायोजित हो सके।

Scanned with CamScanner

1.5.2 माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य (Aims of Teaching of Social Studies at Secondary Level) :– इस स्तर पर सामाजिक अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं–

1. प्रजातंत्र का महत्व (Importance of Democracy) :– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को प्रजातंत्र के महत्व के विषय में अवगत कराया जाये तथा यह बताया जाये कि मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के लिए प्रजातंत्र का होना अति आवश्यक है। वर्तमान समय में लगभग संसार के सभी देशों में प्रजातांत्रिक शासन–प्रणाली विद्यमान है। इस स्तर पर छात्रों को प्रजातंत्र के विकास के लिए सहयोग, सद्भावना, धर्म–निरपेक्षता, सहनशीलता, सहिष्णुता, सामाजिक एवं आर्थिक क्षमता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि की ओर सजग किया जाना चाहिये।

2. परिवर्तन की प्रक्रिया का ज्ञान (Knowledge of Changing Process) :– प्राचीनकाल से अब तक प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो, राजनैतिक हो या धार्मिक, प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन आये हैं। ये परिवर्तन समाज में कुछ तो अच्छाई लिये हुये हैं तथा कुछ परिवर्तन हमारे मूल्यों व संस्कृति का अवमूल्यन भी कर रहे हैं। अतः विद्यार्थियों को इन परिवर्तनों का ज्ञान होना अति आवश्यक है कि क्या–क्या परिवर्तन अब तक हुये हैं जो मानव समस्या को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

3. अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास (Feeling of Internationalism) :– माध्यमिक स्तर पर छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जाये। आज के युग में सभी राष्ट्र एक–दूसरे के इतने निकट

Scanned with CamScanner

आ गये हैं कि एक राष्ट्र में होने वाली घटना अन्य राष्ट्रों को भी प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती। ऐसी स्थिति में यदि संसार के सभी राष्ट्रों को एक–दूसरे का निरन्तर भय रहेगा तो प्रत्येक राष्ट्र अपनी रक्षा के लिये अधिक से अधिक विनाशकारी शस्त्रों के निर्माण में लगा रहेगा। अतः जरूरी यही है कि जिस प्रकार से एक परिवार के छोटे तथ बड़े सभी सदस्य प्रेम के साथ जीवन यापन करते हैं उसी प्रकार से इस विश्व रूपी बड़े परिवार के सभी राष्ट्रों को प्रेम से रहना परम आवश्यक है। चूँकि आधुनिक युग परस्पर निर्भरता का युग है, इसलिए मिलजुल कर रहने तथा एक–दूसरे की सहयता एवं सहयोग देने में ही सबका कल्याण निहित है। ऐसी स्थिति में छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीयता दृष्टिकोण का विकास करना केवल आवश्यक ही नहीं है अपितु अनिवार्य भी है।

4. विश्व के भौगोलिक क्षेत्रों की परस्पर निर्भरता की जानकारी () :– इस स्तर पर विद्यार्थियों को विश्व के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की जानकारी देना ही पर्याप्त नहीं होगा अपितु उन्हें यह भी जानकारी प्रदान की जाये कि ये भौगोलिक क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक–दूसरे पर किस प्रकार से निर्भर है। यही पररपर निर्भरता सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधे हुए है।

5. भौगोलिक अवधारणाओं की जानकारी– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को यह जानकारी भी दी जाये कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तियों का जीवन–यापन उनकी भौगोलिक स्थितियों से बहुत प्रभावित होता है। भौगोलिक अवधारणाओं की जानकारी से छात्रों को यह अनुभव कराया जाये कि विभिन्न भौगोलिक स्थितियों के कारण विश्व के विभिन्न क्षेत्रों का अपना विशिष्ट अस्तित्व है। इसी आधार पर विश्व की समस्याओं का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाना चाहिये।

6. देश की शासन व्यवस्था की जानकारी– माध्यमिक स्तर पर भावात्मक एकता सुदृढ़ करने के साथ–साथ छात्रों को देश की शासन व्यवस्था के विषय में भी जानकारी प्रदान की जाये जिससे वे देश की प्रशासनिक संरचना एवं विभिन्न राजनीतिक एवं नागरिक संस्थाओं की कार्य प्रणाली से भली भांति परिचित हो सकें। यह जानकारी छात्रों को ने केवल देश की शासन व्यवस्था के विषय में जागरूक बनायेगी अपितु उसमें परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार आवश्यक संशोधन करने के लिए प्रेरित भी कर सकेगी।

7. विभिन्न संस्कृतियों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को यह बताया जाये कि आज मनुष्य की सभ्यता एवं संस्कृति जिस विकास की स्थिति पर विद्यमान है उसमें किसी एक संस्कृति, जाति या देश का योगदान नहीं है अपितु इसका विकास विभिन्न संस्कृतियों के सहयोग से हुआ है। इसी तथ्य के आधार पर विद्यार्थियों में विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करना चाहिये।

Scanned with CamScanner

8. मानव सभ्यता की बुनियादी एकता की जानकारी– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को इस बात की जानकारी दी जाये क देखने में विश्व की सभ्यतायें अलग–अलग दिखाई देती हैं। परन्तु वस्तुतः उनमें बुनियादी एकता विद्यमान है। इसी बुनियादी एकता के आधार पर विश्व संस्कृति तथा बसुधैव कुटुम्बकम की कल्पना की गई है।

9. परिवर्तन प्रक्रिया की जानकारी– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को परिवर्तन प्रक्रिया की जानकारी दी जानी चाहिये। विद्यार्थियों को इस तथ्य से अवगत कराया जाये कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आधुनिक युग तक आते–आते मानव समाज और जीवन में अनेकों प्रकार के परिवर्तन हुए हैं तथा उनको भी इस परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना है।

10. सूझबूझ प्राप्ति संबंधी उद्देश्य (Objectives Related to acquire understanding) :–

i. अतीत तथा वर्तमान के विभिन्न समाजों की संस्कृतियां संपूर्ण रूप से एकीकृत है तथा उन्हें संस्कृति के अन्तः संबंध के अध्ययन के द्वारा ही पूर्ण रूप से समझा जा सकता है।
ii. सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में उचित ढंग से समायोजन की सूझ–बूझ विकसित करना।
iii. मानसिक सोच को विस्तृत करते हुए विश्व के बारे में ज्ञान प्रदान करना, परिणामस्वरूप विद्यार्थी विश्व के विचारों तथा संस्थाओं के प्रति विश्वसनीय तथ्यों में राष्ट्रीयता तथा प्रभुसत्ता के बारे में बताने में समर्थ हो जायें।
iv. प्राचीन समय से आज तक समाज का विकास हो रहा है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी आधुनिकरण से विश्व के सभी लोग एक–दूसरे के समीप आ रहें हैं, जो अन्तः संबंधों तथा अन्तः निर्भरता के महत्व को समझने में सहायता करता है।

11. सामाजिक अध्ययन अभिवृत्तियों की प्राप्ति संबंधी उद्देश्य (Objectives Related to Acuuiring Social Studies Attitude) :–

i. विभिन्न समूहों के सुधार हेतु व्यक्तिगत रूप से योगदान देने की इच्छा।
ii. जाति, रंग तथा मतों से परे सभी के योगदान तथा अधिकारों के प्रति आदर की भावना।
iii. उत्तरदायित्व की भावना से परिचित होना।
iv. सामाजिक संरचना के बनाने में दिये गये बलिदानों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
v. सामान्य प्रक्रिया के रूप में परिवर्तन की आवश्कता को महसूस करना।
vi. सामाजिक मूल्यों के महत्व को समझकर उनको बढ़ावा देना।

Scanned with CamScanner

1.7 लक्ष्य एवं उद्देश्य में अंतर (Difference between Aims and Objectives) :– अधिकांश शिक्षक प्रायः लक्ष्य, मत, अभिमन, उद्देश्य आदि शब्दों को समानार्थी रूप में देखते हैं। कुछ शिक्षक इनको प्रथक अर्थ में देखते हैं। अग्र बिन्दुओं के द्वारा लक्ष्य तथा उद्देश्य के अंतर को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

शिक्षा में लक्ष्य	शिक्षा के उद्देश्य
1. लक्ष्य शिक्षा में मार्ग निर्देश है। ये संभावित उपलब्धि के ध्येय होते हैं।	1. उद्देश्य वे बिन्दु होते हैं जो मार्ग निर्देशों में संभावित उपलब्धि को प्रदर्शित करते हैं।
2. शिक्षा के लक्ष्य विषयवार परिवर्तित नहीं हो सकते	2. उद्देश्य विषयवार परिवर्तित हो सकते हैं। समाज

Scanned with CamScanner

हैं।	विज्ञानों के उद्देश्य विज्ञानों के उद्देश्यों से भिन्न होंगें।
3. लक्ष्य व्यापक होते हैं।	3. उद्देश्यों की उत्पत्ति लक्ष्यों से होती है।
4. दिन–प्रतिदिन के कार्यों में लक्ष्यों का महत्व कम होता है।	4. उद्देश्य विशिष्ट होते हैं। अतः ये अर्थपूर्ण होते हैं।
5. लक्ष्य विषय की विषयवस्तु के चयन में अधिक सहायक नहीं होते हैं।	5. उद्देश्य विषय की विषय वस्तु तथा शिक्षण अधिगम क्रियाओं के चयन में सहायक होते हैं।
6. लक्ष्य वे मार्ग निर्देश है जो संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का निदेशन करते हैं। यह निदेशन कक्षा में तथा कक्षा के बाहर किया जाता है।	6. उद्देश्य कक्षा कक्ष तथा विद्यालय या शिक्षा संस्था तक सीमित रहते हैं।

1.8 सारांश– इस इकाई में हमने सामाजिक अध्ययन शिक्षण के प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर उद्देश्यों एवं लक्ष्यों पर विचार किया है। विश्व की प्रत्येक वस्तु, विचार तथा कार्य से लाभदायक परिणाम को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कि उनके पूर्व निर्धारित निश्चित उद्देश्य हों। यही सत्य सामाजिक अध्ययन के लिए भी लागू होता है इसके अतिरिक्त जब व्यकित के सामने कोई निश्चित उद्देश्य होता हे तो उसमें संबंधित कार्य करने की प्रेरणा उत्पन्न होती है, जिनका बल तथा प्रोत्साहन पाकर वह बाधाओं एव कठिनाइयों की चट्टान को चूर करता हुआ विश्व के महान से महान कार्य कर डालता है। इस तथ्य के आधार पर यही कहा जा सकता है कि उद्देश्य रहित शिक्षा प्राप्त करने में न मन लगता है और न ही वह शिक्षा फलदायिनी होती है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि उद्देश्य एक पूर्व निर्धारित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता हे अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य निश्चित और स्पष्ट है तो व्यक्ति उस समय तक उत्साहपूर्वक चलता रहता है जब तक कि वह उस लक्ष्य को प्राप्त न कर ले। जैसे–जैसे लक्ष्य निकट आता जाता है वैसे–वैसे उसकी क्रियाओं में भी अंतर आता जाता हे। अन्त में एक समय ऐसा आता है जब मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने को ही उद्देश्य की प्राप्ति कहते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उद्देश्य वह पूर्व दर्शित लक्ष्य है जिसके प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ चिन्तनशील रहते हुए क्रियाशील होता है।

Scanned with CamScanner